अगस्त २०१७

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

श्री कृष्ण

संपादकीय

बाल मित्रों,

गोविंद बोलो हरि गोपाल बोलो...
हरे क्रिष्ना, हरे क्रिष्ना, क्रिष्ना क्रिष्ना हरे हरे...

श्रावण महीने की अष्टमी अर्थात् श्री कृष्ण जन्म का पवित्र दिन। आज से करीब पाँच हजार साल पहले इस दिन भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। बाल कृष्ण की लीला से लेकर योगेश्वर श्री कृष्ण की गीता जग प्रसिद्ध है।

फिर भी उनके बारे में ऐसी कई अद्भुत बातें हैं जिन्हें आप नहीं जानते।

तो आइए, उनके जन्म दिन से संबंधित एवं उनके बारे में नई-नई बातें जाने और उनकी भक्ति में डूब जाएँ।

-डिम्पल मेहता

श्री कृष्ण

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकः
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५ अंकः ५
अखंड क्रमांकः ५३
अगस्त २०१७

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI, Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421. Dist-Gandhinagar.

ज्ञानी कहते हैं...

नीरू माँ : श्री कृष्ण भगवान का चरित्र बहुत सुंदर है। श्री कृष्ण के बाल चरित्र से लेकर, योगेश्वर कृष्ण को शिकारी का तीर लगा, तब तक का पूरा चरित्र ज़बरदस्त है। जैन महाभारत में भी कृष्ण भगवान की सुंदर बातें हैं। उन्हें वासुदेव कहा गया है। वासुदेव अर्थात् ज़बरदस्त पावरफुल। उनका पावर इतना ज्यादा था कि वे आधी पृथ्वी के राजा थे।

कर्म को कृश करें (जीते) वह कृष्ण। सब लोग अपने जीवन में कर्म लेकर तो आए ही हैं। लेकिन जीवन में जब भयंकर कर्म आते हैं और हमें घेर लेते हैं तब वे कर्म हमें कृश कर देते हैं। अर्थात् हमें वश कर लेते हैं। जबकि श्री कृष्ण भगवान ने कर्म को कृश कर दिया था। अर्थात् कर्मों को जीत लिया था। इसलिए वे जितेन्द्रीय थे।

दीपक भाई : श्री कृष्ण नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहलाते थे। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य क्या है कि "निष्ठा में निरंतर ब्रह्मचर्य"। यानी भाव ब्रह्मचर्य। आचरण में उदय कर्म के अनुसार कुछ भी होता हो। उनके भाव में अखंड, निरंतर ब्रह्मचर्य ही रहता था। कृष्ण भगवान ऐसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे। १६०० रानियाँ थीं फिर भी वे सदा ब्रह्मचारी कहे जाते थे। यह कैसे हो सका? तो कहेंगे कि आत्मा में रहना, ब्रह्म में चर्या (रहना) ही अंतिम ब्रह्मचर्य है। वे निरंतर आत्मरूप हुए इसलिए ब्रह्मचारी हुए।

नीरू माँ : कुरुक्षेत्र की भूमि पर श्री कृष्ण ने अर्जुन को आत्मा का ही ज्ञान दिया था। और उसे अपने आत्मस्वरूप की पहचान करवाई। तब तक तो अर्जुन श्री कृष्ण को एक मित्र, अपना सारथि, अपनी पत्नी का भाई, इसी रूपों में पहचानते थे। सही दृष्टि से नहीं पहचानते थे। अपने बड़े हैं, अपने हितेच्छु थे इसलिए पूज्य भाव था। लेकिन उनका असल स्वरूप क्या है उसका पता नहीं था।

इसलिए श्री कृष्ण को खुद कहना पड़ा कि, "मेरे सच्चे स्वरूप को पहचानो। मैं परमात्मा स्वरूप हूँ, देह स्वरूप हूँ ही नहीं। तुम मेरे साथ इतने सालों से हो फिर भी तुम मुझे नहीं पहचानते।"

उन्होंने कहा, "ज्ञानी मुझे सब से प्रिय हैं। ज्ञानी और मुझ में तुम फर्क मत समझना। ज्ञानी ही मेरा आत्मा है।"

यह बात हम कैसे भूल सकते हैं?

भगवान कृष्ण कौन हैं?

आज कृष्ण भगवान दो तरह से पहचाने और पूजे जाते हैं। बालकृष्ण और योगेश्वर कृष्ण। भगवान कृष्ण को सही ढंग से एक ही व्यक्ति पहचानते हैं और वे हैं ज्ञानीपुरुष, क्योंकि उनकी आत्मा की जागृति कृष्ण भगवान जैसी है। ऐसे ज्ञानी अत्यंत दुर्लभ होते हैं।

कई लोग सोचते हैं कि भगवान कृष्ण ने युद्ध किए, कई लोगों को मार डाला, उनकी सोलह हज़ार रानियाँ थीं और वे आरामदायक और वैभवी जीवन जीए। यह सब होते हुए उन्हें भगवान कैसे कहेंगे? क्यों पूरी दुनिया के लोग उन्हें भक्ति भाव से पूजते हैं?

हकीकत में भगवान (यानी कि आत्मा) कृष्ण भगवान में प्रकट हुए। दूसरे शब्दों में कहें तो वे आत्म साक्षात्कारी पुरुष थे। उन्हें आत्मा की निरंतर जागृति थी। (निरंतर जागृति अर्थात् "मैं शुद्ध आत्मा हूँ और शरीर अलग है।")

सांसारिक व्यवहार में भौतिक रूप से जुड़े होने पर भी उन्हें "मैं कर्ता नहीं हूँ" की निरंतर जागृति रहती थी। उन्हें कई रानियाँ थीं और वे भव्य और वैभवी जीवन जीए फिर भी उनकी निष्ठा में हमेशा ब्रह्मचर्य ही था। इसलिए वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहलाए। अपने कर्मों से कोई छूट नहीं सकता और अपने कर्मों का असर जागृति के साथ भोगना ही पड़ता है। ऐसी आत्म जागृति के साथ उन्होंने अपना जीवन जीया।

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

श्री कृष्ण कहते हैं...

"यह गीता यदि लाख लोग पढ़ेंगे तो उनमें से कोई एक इसका स्थूल अर्थ समझेगा। ऐसे लाख स्थूल अर्थ समझने वालों में से कोई एक उसका सूक्ष्म अर्थ समझेगा। ऐसे लाख सूक्ष्म अर्थ समझने वालों में कोई एक उसका सूक्ष्मतर अर्थ समझेगा। और ऐसे लाख सूक्ष्मतर अर्थ समझने वालों में से कोई एक उसका सूक्ष्मतम अर्थ समझेगा। और ऐसा उसका सूक्ष्मतम अर्थ समझने वाले स्वयं कृष्ण ही होंगे।"

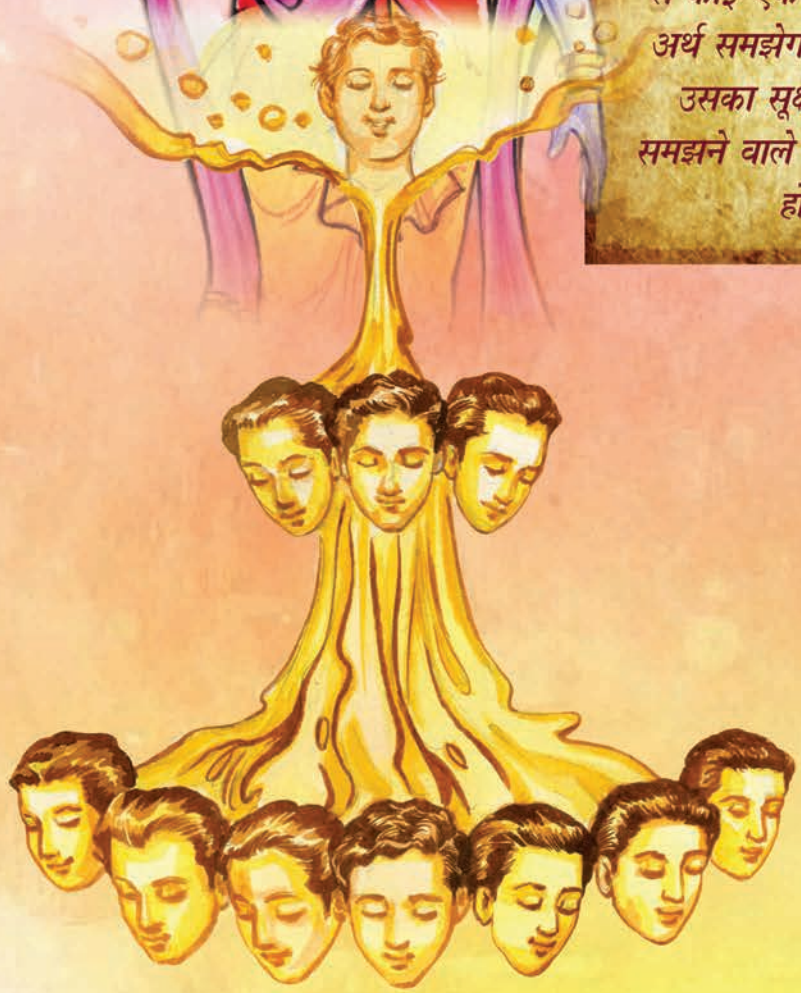

यह ही

युद्ध के मैदान में विरोधी पक्ष में अपने स्वजनों को देखकर अर्जुन व्याकुल होकर मन से टूटकर बैठ गया, तब श्री कृष्ण भगवान ने उसे बोध देकर खड़ा किया। अर्जुन को उठाने में ही यह गीता का ज्ञान निकला। आज ५१०० साल के बाद भी हज़ारों लोगों को यह गीता ऊपर उठाती है। गीता का आधार लेकर लोग जीवन के दुःखों से निकलते हैं। यदि हज़ारों सालों के बाद भी जो शब्दों में पढ़कर लोगों को उठा रही है, तो वह गीता जब प्रत्यक्ष श्री कृष्ण के मुख से निकल रही होगी तब उसने अर्जुन को क्या नहीं दिया होगा।

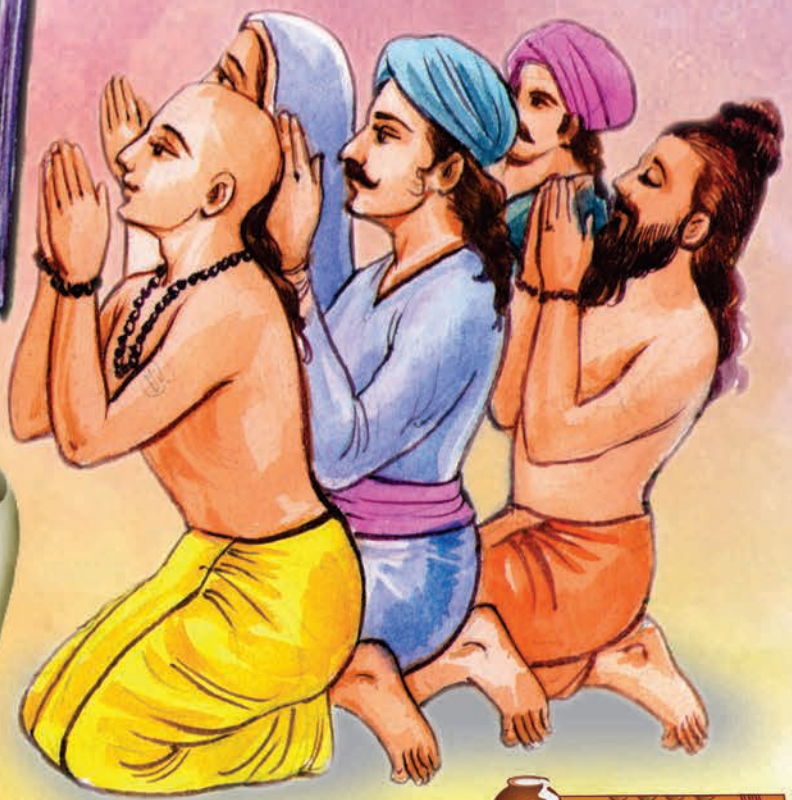

तो नई बात है!

श्री कृष्ण भगवान बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान के चाचा के बेटे थे।

श्री कृष्ण भगवान की मदर देवकी और उनके बड़े भाई बलदेव भी आने वाली चौवीसी में तीर्थंकर बनेंगे।

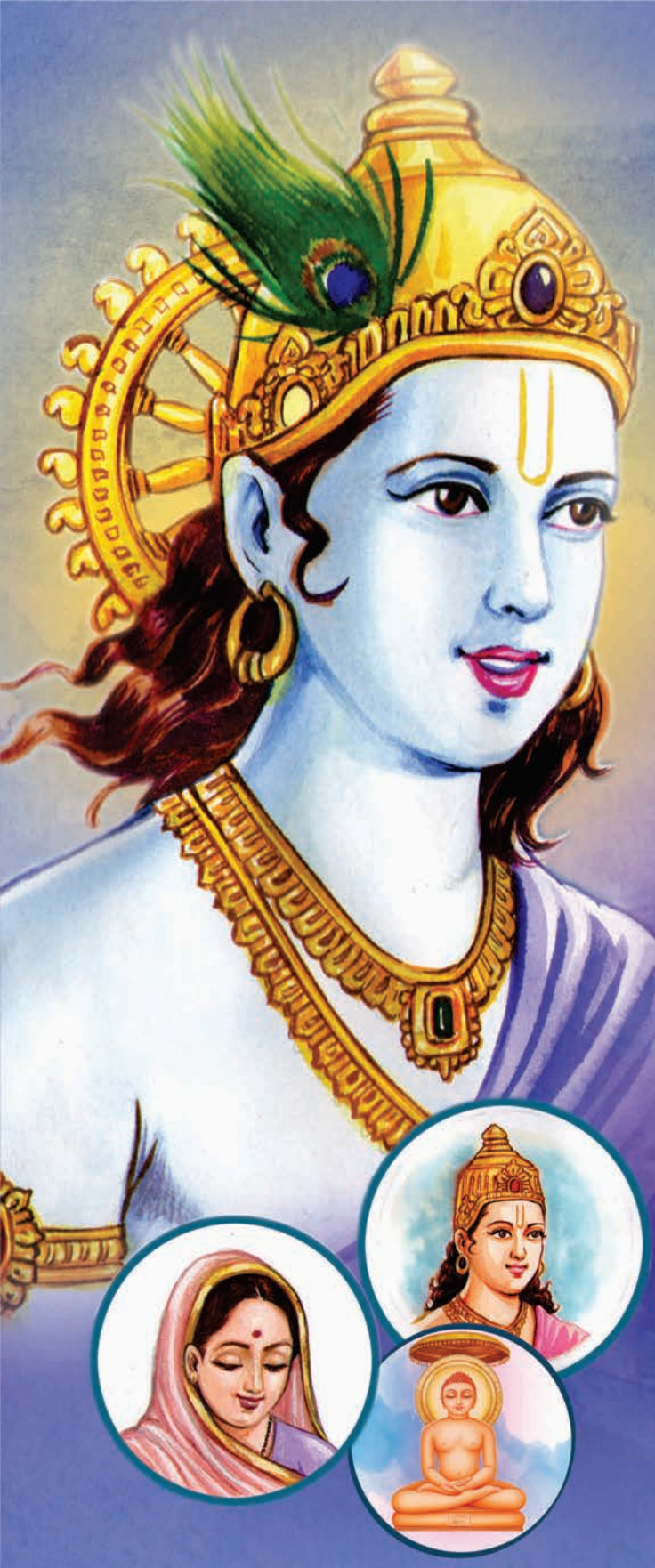

श्री कृष्ण भगवान आने वाली चौबीसी में अमम नाम से बारवें तीर्थंकर बनेंगे।

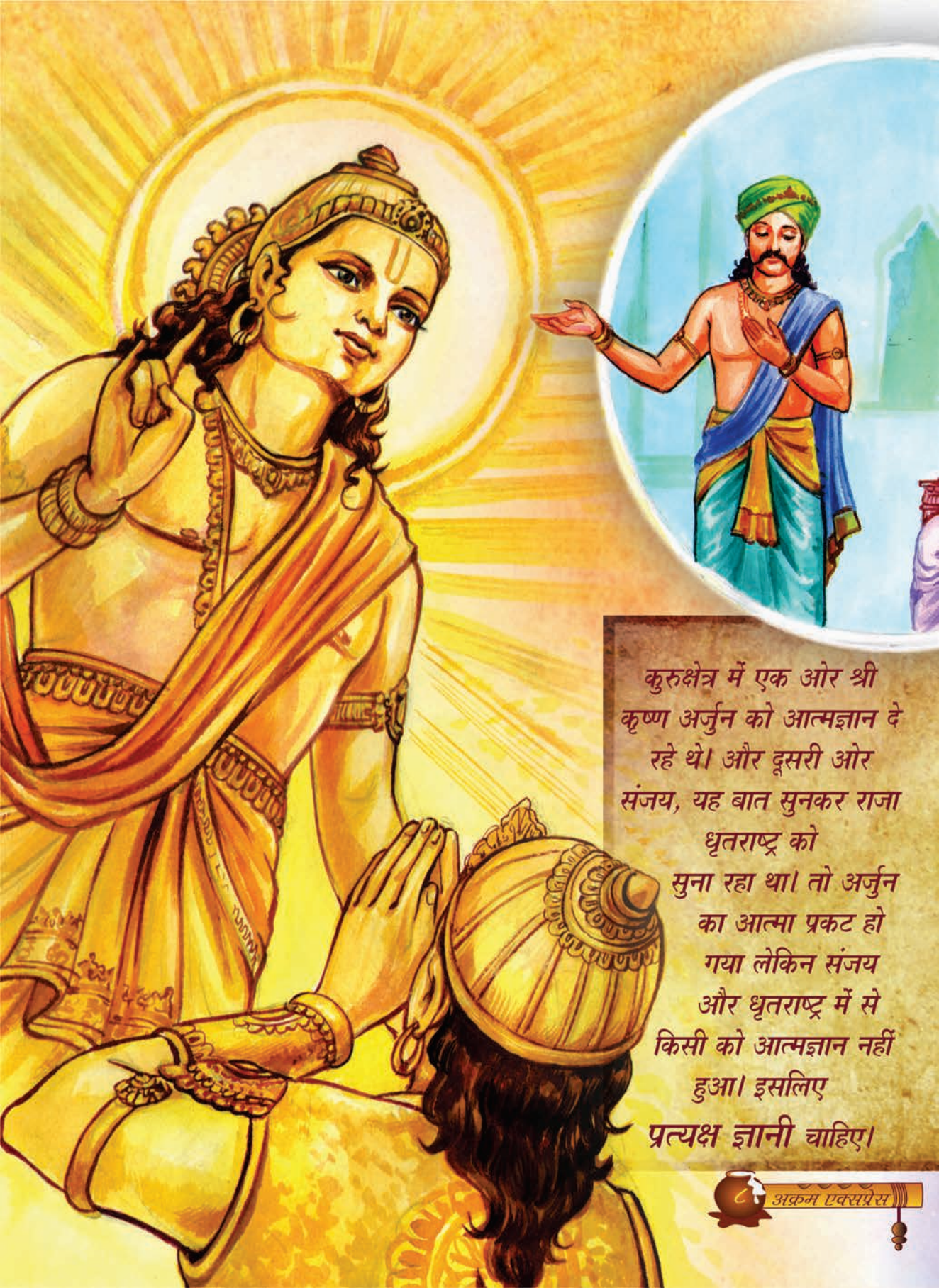

कुरुक्षेत्र में एक ओर श्री कृष्ण अर्जुन को आत्मज्ञान दे रहे थे। और दूसरी ओर संजय, यह बात सुनकर राजा धृतराष्ट्र को सुना रहा था। तो अर्जुन का आत्मा प्रकट हो गया लेकिन संजय और धृतराष्ट्र में से किसी को आत्मज्ञान नहीं हुआ। इसलिए **प्रत्यक्ष ज्ञानी** चाहिए।

भगवान श्री कृष्ण वासुदेव भगवान थे।
नर में से **नारायण** बने थे।

भाव का महत्व

एक बार दुर्वासा ऋषि वृंदावन पधारे। उस समय यमुना नदी में बाढ़ आई हुई थी। इसलिए नदी पार करके सामने किनारे पर नहीं जा सकते थे। इसलिए दुर्वासा ऋषि वहीं बैठ गए।

यह समाचार मिलते ही श्री कृष्ण ने सभी गोपियों से ऋषि के लिए भोजन का थाल तैयार करने के लिए कहा। गोपियों ने तरह-तरह के पकवान, फल-फलादि और स्वादिष्ट व्यंजन बनाए। थाल तैयार तो हो गया लेकिन अब उस पार कैसे जाए? उसमें भी दुर्वासा ऋषि अपने गुस्से के लिए बहुत प्रचलित थे। गोपियाँ उलझन में पड़ गई। अंत में वे अपनी उलझन लेकर श्री कृष्ण के पास गई।

श्री कृष्ण ने उनसे कहा, "यमुना जी से कहना कि यदि कृष्ण सदा ब्रह्मचारी हैं तो हमें मार्ग दीजिए"। गोपियाँ यमुना किनारे गई और श्री कृष्ण के कहे अनुसार यमुना जी से विनती की।

और यमुना जी तुरंत ही दो भागों में बंट गई। और उसमें मार्ग बन गया।

यह देखकर सभी गोपियाँ बहुत खुश हो गई। दुर्वासा ऋषि का स्वागत किया, उन्हें भोजन परोसा। मुनि ने भी भरपेट भोजन किया और गोपियों को बहुत आशीर्वाद दिए।

अब गोपियों को वापस लौटना था। लौटते समय फिर वही समस्या। यमुना नदी फिर से पहले की तरह बहने लगी थीं। उसे पार कैसे करें?

उन्होंने अपनी समस्या दुर्वासा ऋषि को बताई।

ऋषि ने कहा, "यमुना जी से कहना कि यदि दुर्वासा मुनि सदा उपवासी हैं तो हमें मार्ग दीजिए।"

गोपियाँ उन्हें प्रणाम करके वापस लौटीं। यमुना तट पर आकर उन्होंने यमुना जी से विनती की। और तुरंत यमुना जी ने मार्ग दे दिया।

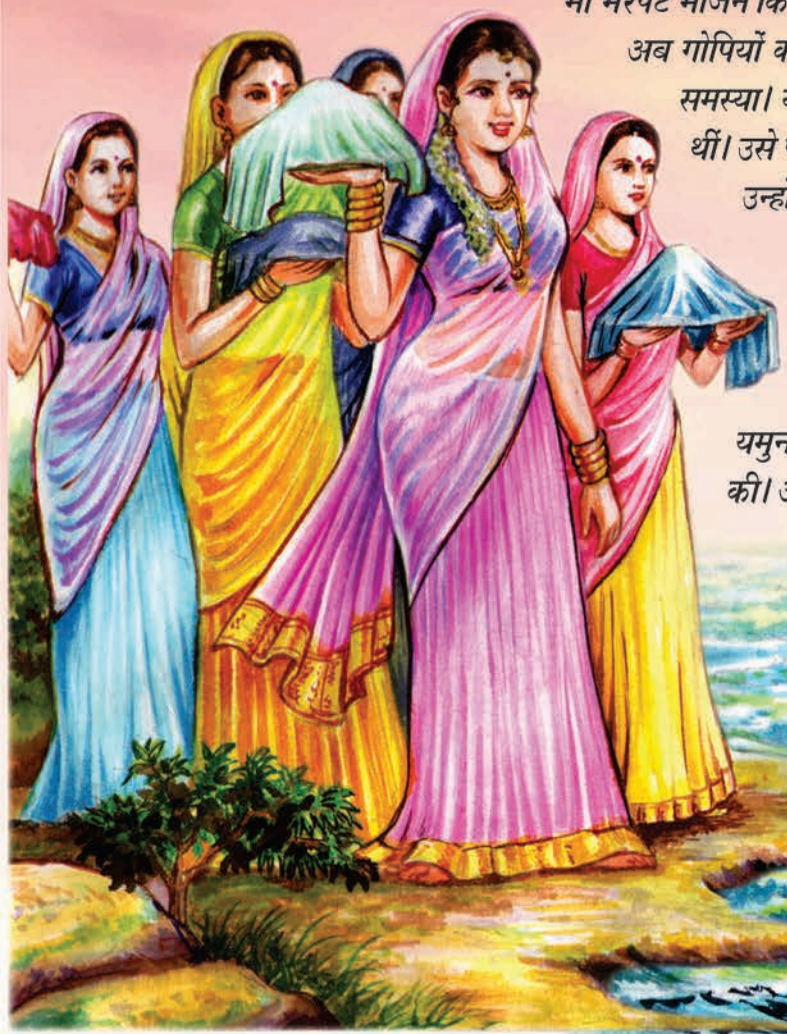

गोपियाँ आराम से वृंदावन वापस लौट आई। लेकिन उन्हें एक कुतूहल हुआ कि, "श्री कृष्ण को इतनी सारी रानियाँ हैं! और फिर कितनी गोपियों के साथ उनके स्नेह संबंध हैं! तो उन्हें ब्रह्मचारी कैसे कहा जा सकता है? और दुर्वासा ऋषि ने तो हमारे सामने ही पूरा भोजन से भरा थाल खाया है। फिर वे सदा उपवासी कैसे कहे जाएँगे?"

और मंथन करने पर उन्हें क्रिया और भाव का महत्व समझ में आया।

इतनी रानियाँ होते हुए भी श्री कृष्ण की निष्ठा में हमेशा ब्रह्मचर्य ही था इसलिए वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहलाए। और दुर्वासा ऋषि इतना खाना खाने पर भी वृत्तियों में कभी लुब्ध नहीं होते थे।

श्री कृष्ण ऐसे निर्लेप थे।

कलियुग की

एक बार युधिष्ठिर के अलावा चारों पांडव भगवान श्री कृष्ण से मिलने गए। चारों पांडवों ने विनयपूर्वक श्री कृष्ण से पूछा, "हे प्रभु, कलियुग में व्यक्ति किस तरह जीता होगा और कलियुग में कैसी स्थिति प्रवर्तती होगी?"

यह सुनकर भगवान श्री कृष्ण ने चारो दिशाओं में एक-एक बाण छोड़ा और फिर चारों भाइयों को वह बाण ढूँढ लाने की आज्ञा दी।

अर्जुन जिस दिशा में बाण लेने गए वहाँ उन्होंने एक विचित्र घटना देखी।

एक कोयल मधुर आवाज़ में गीत गा रही थी। अर्जुन वहाँ रुक गए। उन्होंने कोयल की ओर देखा तो आश्चर्य से आँखें फैल गई। मधुर आवाज़ में गीत गाने वाली कोयल एक खरगोश का माँस भी खा रही थी। खरगोश दर्द से थराह रहा था और कोयल गीत गाते-गाते उसका मांस खा रही थी।

भीम जिस दिशा में बाण लेने गए वहाँ उन्होंने भी एक अचंभा देखा।

एक जगह पाँच कुए थे। चार कुए पानी से छलक रहे थे। इन चार कुओं के ठीक बीच में पाँचवां कुआ था जो बिल्कुल ही खाली था। भीम को यह समझ में नहीं आया कि चार कुए छलक रहे हैं तो बीच का पाँचवां कुआ बिल्कुल खाली क्यों है?

नकुल जिस दिशा में बाण लेने गए थे वहाँ उन्होंने एक गाय को बच्चा जन्म देते हुए देखा। बच्चे को जन्म देने के बाद गाय उसे चाटने लगी। थोड़ी देर में बच्चे के शरीर की गंदकी साफ हो गई। फिर भी गाय ने चाटना जारी रखा। अब तो छोटे से बच्चे की कोमल चमड़ी से खून निकलने लगा, फिर भी गाय ने चाटना जारी ही रखा।

सहदेव जिस दिशा में बाण लेने गए वहाँ उन्होंने भी एक आश्चर्यजनक घटना देखी।

किसी बड़े पर्वत से शिला नीचे गिर रही थी। नीचे गिरती हुई शिला रास्ते में आने वाले छोटे-बड़े पत्थरों और वृक्षों को धराशाई करते हुए तलहटी की ओर आगे बढ़ रही थी, लेकिन एक छोटा पेड़ बीच में आया और शिला रुक गई।

चारो पाँडवों ने वापस आकर अपनी देखी हुई घटनाओं का वर्णन भगवान श्री कृष्ण से किया और उसका अर्थ समझाने की विनती की।

भगवान श्री कृष्ण ने कहा,

"ये चार घटनाएँ कलियुग की स्थिति कैसी होगी उसे बताती हैं। साधु कोयल की तरह मीठी आवाज़ में बातें करेंगे और खरगोश जैसे भोले अनुयायियों का दर्द दूर करने के बहाने उनका शोषण करेंगे। चार कुए पानी से छलक रहे थे फिर भी पास के सूखे कुए को एक बूंद भी पानी नहीं दे रहे थे, इसी तरह कलियुग में अमीरों के यहाँ संपत्ति की बारिश होगी लेकिन वे एक पैसा भी आसपास के ज़रूरतमंद व्यक्तियों को नहीं देंगे। गाय ने अपने बच्चे की चाट-चाटकर खाल भी उखाड़ दी, उसी तरह कलियुग में माता-पिता अपनी संतान को ज़रूरत से ज्यादा प्यार करके कमज़ोर बना देंगे और अपनी ही संतान को हानि पहुँचाएँगे। पर्वत से गिरती हुई शिला की तरह कलियुग में इंसान का चरित्र भी सतत नीचे गिरता रहेगा। नीचे गिरते हुए चरित्र को कोई रोक नहीं पाएगा लेकिन सिर्फ प्रभु का सहारा या सत्संग रूपी छोटा पेड़ होगा तो उससे चरित्र नीचे गिरने से रुक जाएगा।"

चारो पांडवों को अच्छी तरह से समझ में आ गया कि कलियुग में कैसी स्थिति होगी।

अर्जुन की

एक बार अर्जुन ने श्री कृष्ण से पूछा, "भगवान, कर्ण को लोग क्यों बड़े भाई युधिष्ठिर से ज्यादा उदार मानते हैं? चाहे किसी भी व्यक्ति ने उनसे कोई भी चीज़ माँगी हो लेकिन उन दोनों ने कभी मना नहीं किया। तो फिर कर्ण को ही क्यों युधिष्ठिर से ज्यादा महान कहा जाता है?"

भगवान ने हँसकर जवाब दिया, "चलो तुम्हें बताएँ, ऐसा क्यों है?"

ब्राह्मण का भेष बनाकर दोनों पहले युधिष्ठिर के दरबार में गए और यज्ञ करने के लिए चंदन की लकड़ी माँगी। राजा ने तुरंत ही अपने सैनिकों से राज्य में जहाँ से भी चंदन की लकड़ी मिले वहाँ से ढूँढकर लाने के लिए कहा। बरसात की ऋतु होने की वजह से पेड़ गीले हो गए थे इसलिए सैनिक भीगी लकड़ी लेकर वापस आए। भीगी लकड़ियों से यज्ञ करना संभव नहीं था।

फिर कृष्ण और अर्जुन कर्ण के दरबार में गए और चंदन की लकड़ियों की माँग की। कर्ण ने थोड़ा सोचकर जवाब दिया, "कई दिनों से बरसात होने की वजह से चंदन की सूखी लकड़ी मिलना संभव नहीं है। लेकिन एक और उपाय है। थोड़ा इंतज़ार कीजिए।"

इतना कहकर कर्ण दरबार में चंदन से बनी हुई खिड़की और दरवाज़े तोड़कर उनके टुकड़े करने लगे। टुकड़े करने के बाद उन्होंने चंदन की सूखी लकड़ियाँ दोनों ब्राह्मणों को यज्ञ करने के लिए भेंट में दी। उनका स्वीकार करके वे चले गए।

रास्ते में कृष्ण ने अर्जुन से पूछा, "अर्जुन अब तुम्हें दोनों के बीच का अंतर समझ में आया? यदि हमने युधिष्ठिर से यज्ञ करने के लिए उनके दरबार में चंदन से बनी हुई खिड़की और दरवाज़े की लकड़ी माँगी होती तो वे एक क्षण भी सोचे बिना हमें दे देते। लेकिन वे खुद ऐसा नहीं सोच पाए। हमने तो कर्ण से भी ऐसा करने के लिए नहीं कहा था। युधिष्ठिर ने हमारी मदद की क्योंकि वह उनका धर्म था। कर्ण ने इसलिए दिया क्योंकि उसे प्रेम से देना अच्छा लगता है।

उलझन

दोनों के बीच यही अंतर है और इसीलिए कर्ण को महान कहा जाता है। आप जो कुछ भी कार्य करो वह उदारता से किया हुआ तभी कहलाता है। जब उसे प्रेम से दिया जाता है।"

हम अलग-अलग ध्येय से काम करते हैं। जैसे कि किसी ने हमसे करने के लिए कहा हो या फिर वह हमारी फर्ज़ हो या धर्म समझकर या फिर जैसे कर्ण ने किया वैसे प्रेम से काम करने में आनंद मिलता हो। सब से ज्यादा उत्तम यह है कि, आप जो काम करो वह प्रेम से करो और उसका आनंद उठाओ।

जैन शास्त्र में दस आश्चर्य हैं। उसमें भगवान श्री कृष्ण का एक बहुत बड़ा आश्चर्य माना जाता है।

एक बार ऐसा हुआ, भगवान कृष्ण के समय में द्रोपदी का अपहरण दूसरी पृथ्वी पर हो गया था।

अपना यह जम्बूद्वीप का भरत क्षेत्र कहा जाता है। दूसरा घातकी खंड का भरत क्षेत्र कहा जाता है। ऐसे पाँच भरत क्षेत्र हैं, पाँच महाविदेह क्षेत्र हैं और पाँच ऐरावत क्षेत्र हैं। पाँचवें के दूसरे घातकी खंड के भरतक्षेत्र में उस समय में पद्मनाभ नामक राजा थे। नारद मुनि ने उनसे द्रोपदी के रूप का सुंदर वर्णन किया। इसलिए वे द्रोपदी के प्रति आकर्षित हो गए। और उन्होंने देवताओं से द्रोपदी का अपहरण करवाया।

उसके बाद उन्होंने द्रोपदी से शादी करने की माँग की। द्रोपदी तो सती थीं। इसलिए उन्होंने किसी भी तरह इस माँग को स्वीकार नहीं किया। लेकिन उन्होंने राजा से एक महीने की मोहलत माँगी कि, "मुझे एक महीने का समय दीजिए"। राजा ने उनकी माँग स्वीकार कर ली।

उस एक महीने के दौरान द्रोपदी ने व्रत, भक्ति और आराधना की। और भगवान कृष्ण को याद किया। देवों से प्रार्थना की, कि मुझे इसमें से बचाइए।

अब एक पृथ्वी से दूसरी पृथ्वी पर सःशरीर नहीं जा सकते, ऐसा कुदरत का नियम है। लेकिन भगवान श्री कृष्ण पहुँच सके! और वहाँ जाकर पद्मनाभ के साथ युद्ध किया, उन्हें हराकर द्रोपदी को वापस लाए। वापस लौटते समय भगवान श्री कृष्ण ने अपना शंख बजाया।

उस समय उसी क्षेत्र में दूसरे वासुदेव, कपिल वासुदेव थे। जब कृष्ण ने शंख बजाया तब वे वहाँ के तीर्थंकर की सभा में बैठे हुए थे। उन्हें उस शंख का नाद सुनाई दिया। उन्होंने तुरंत भगवान से पूछा, "यह कैसे संभव हुआ? मेरे जैसा शंख कौन बजा रहा है? क्योंकि एक क्षेत्र में, एक समय में एक ही तीर्थंकर होते हैं, एक ही वासुदेव होते हैं, एक ही चक्रवर्ती होते हैं, दो चक्रवर्ती नहीं होते, दो वासुदेव नहीं होते, दो तीर्थंकर नहीं होते। ऐसा कुदरत का नियम है। तो यह कैसे संभव है?"

भगवान ने उत्तर दिया, "यह एक अपवाद है। भरत क्षेत्र के वासुदेव यहाँ आ पाए हैं! अपने ज़बरदस्त बल से उन्होंने पद्मनाभ राजा को युद्ध में हरा दिया है। और वे अभी शंख बजा रहे हैं।"

यह सुनकर कपिल वासुदेव को श्री कृष्ण से मिलने का मन हुआ। उन्होंने भगवान से अपनी इच्छा व्यक्त की। भगवान की मंजूरी मिलते ही वे जाने के लिए निकल पड़े। लेकिन तब तक भगवान द्रोपदी को लेकर बहुत आगे निकल चुके थे। सीमा से बाहर निकल गए थे। जहाँ कपिल वासुदेव नहीं जा सकते।

तब कपिल वासुदेव ने सामने शंख बजाकर कृष्ण वासुदेव के साथ शंख से बातचीत की। जैसे हम टेलीफोन से बात करते हैं, उसी तरह शंख से बात की। वह उनका शंख कैसा होगा? टेलीफोन की तरह ही साफ बातचीत। टेलीफोन से जैसे एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं उसी तरह से दोनों ने बातें की।

कपील वासुदेव ने कहा कि, "मुझे आपसे मिलना है। आप यहाँ आए और मुझे पता ही नहीं चला।" श्री कृष्ण ने कहा, "मैं बहुत आगे निकल गया हूँ। वापस आना बहुत कठिन है। बहुत सारा समय और शक्ति खर्च हो जाएगी। इसलिए हम शंख से ही मिल लेते हैं।" ऐसे मिलकर वे वापस लौट जाते हैं। और भरत क्षेत्र में आ जाते हैं।

एक आश्चर्य

इस तरह यह अध्यात्म का
बहुत बड़ा **आश्चर्य** कहा जाता है।
शंख से दोनों मुलाकात करते हैं।
और एक ही क्षेत्र में दो वासुदेव आ जाते हैं।

गीता सार

महाभारत के महान युद्ध से पहले भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा, "अर्जुन, तुम मेरे साथ लंबे समय से हो फिर भी तुम मुझे सच्चे स्वरूप से नहीं पहचानते। जिसे तुम अपने सामने देख रहे हो वह वास्तव में मैं नहीं हूँ। तुम जिसे देख रहे हो वह शरीर है। मैं शरीर से अलग हूँ। "मैं शुद्धात्मा हूँ", तुम भी शुद्धात्मा हो। तुम्हारे भाई, चाचा, गुरु और मित्र, जिनके साथ तुम अभी लड़ने वाले हो वे भी शुद्धात्मा है। यह लड़ाई तुम्हारा कर्म है, इसलिए तुम्हें आत्मा की जागृति के साथ इसे पूरा करना ही पड़ेगा। यदि तुम आत्मा की जागृति के साथ लड़ाई लड़ोगे तो तुम्हें कोई नया कर्म नहीं बंधेगा और तुम्हारे बाकी बचे कर्म पूरे हो जाएँगे और तुम्हारा मोक्ष होगा।"

इस तरह अर्जुन, कृष्ण भगवान की दी हुई जागृति के साथ रहे। उन्होंने कई महान पुरुषों को मार दिया फिर भी एक भी कर्म नहीं बंधा और उन्हें उसी जन्म में मोक्ष मिला।

गुरुपूर्णिमा के दौरान बच्चों ने किया कल्चरल शो और एक्ज़िबिशन...

Akram Express

August 2017
Year : 5, Issue : 5
Conti. Issue No.: 53

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

और अंत में...

कृष्ण का जन्म रात्रि के अंधकार में जेल में हुआ था। जब उनका जन्म हुआ तब सभी चौकीदार सोए हुए थे, बेड़ियाँ टूट गईं और दरवाज़े अपने आप ही खुल गए।

इसी तरह जब कृष्ण (यानी आत्मा का भान) हमारे अंदर जन्म लेता है कि तुरंत ही नेगेटिविटी रूपी अंधकार चला जाता है, अहंकार और ममता रूपी बेड़ियाँ टूट जाती हैं और जाति, धर्म, संबंधों, कामकाज रूपी दीवारों की जेल के दरवाज़े अपने आप खुल जाते हैं।

और यही जन्माष्टमी का हार्द और महत्व है।

हैप्पी जन्माष्टमी

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published